P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

Yoga in United Nation by Yogi Arun
संयुक्त राष्ट्र संघ में योगी अरुण का योग-कार्यक्रम

जैसा कि सर्व-विदित है दो वर्ष पहले मानव मंदिर मिशन के वार्षिक समारोह में पूज्य आचार्यश्री ने मानव मंदिर योग-धारा को आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी श्री अरूण तिवारी तथा श्री सोहनवीर को दी थी। प्रसन्नता की बात यह है श्री सोहनवीर यूरोप के देशों में तथा श्री अरूण तिवारी पूज्य गुरूदेव के सान्निध्य में अमेरिका आदि देशों में प्रभावशाली ढंग से योग-धारा को आगे ले जा रहे हैं। उसी प्रभावी गूंज का एक उदाहरण है 6 अगस्त 2013 संयुक्त राष्ट्र संघ (मुख्यालय परिसर) न्यूयार्क अमेरिका, यूनाइटेड नेशन्स प्लाजा-3 में यू.एन.ओ. तथा यूनिसेफ के स्टाफ सदस्यों के बीच Stress Release Management के लिए श्री अरूण योगी का योगा-अभ्यास प्रणायाम का आयोजन होना। यद्यपि पूज्य आचार्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन भी आयोजक चाहते थे। किन्तु एक धर्म परंपरा के आचार्य के प्रवचन से आने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए आयोजकों ने क्षमापूर्वक अपनी असमर्थता प्रकट की। योगी जी ने यूनिसेफ द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में तनाव-मुक्ति के लिए विशेष प्रयोग करवाये। इसमें प्राणायाम और ध्यान-विधियां प्रमुख रही। योगी जी के एक घंटे को इस कार्यक्रम में विभिन्न देशों के चालीस प्रतिनिधियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया और योग द्वारा तनाव मुक्ति के गुर सिखे। यू.एन.ओ. तथा यूनिसेफ के बीच इस प्रकार के योगाभ्यास का यह पहला प्रयास था इसलिए आयोजकों ने पूरी सावधानी से कुछ Selected Members के बीच ही यह आयोजन रखा। आयोजन में प्रमुख भूमिका थी आशीष मेहता और उनकी टीम की। आयोजन की सफलता को देखते हुए अगली बार बड़े स्तर पर योगा-कार्यक्रम की पूरी संभावना है।

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी**, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
सितम्बर, 2013

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

पूज्य गुरूदेव के 75वें वर्ष-प्रवेश पर हार्दिक अभिनंदन।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 13 अंक : 09 सितम्बर, 2013

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.rooprekha.com
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष-वाणी - 5
02. बोध-कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. कविता-सुमन - 14
06. कविता - 15
07. जीवन-वृत्त - 16
08. कविता - 21
09. कहानी - 22
10. लघु-कथा - 25
11. असली भक्ति - 26
12. चुटकुले - 27
13. बोलें-तारे - 28
14. समाचार दर्शन - 30
15. झलकियां - 33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री चैनरूप सुशील कुमार पारख, हनुमानगढ़
श्री श्यामलाल वीणादेवी सातरोदिया, हिसार
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब
श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर

आर्ष-वाणी

कहं चरे कहं चिट्ठे, कह मासे कहं सए
कहं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधई।

-आगमवाणी

शिष्य ने भगवान महावीर से पूछा- भगवन्! कैसे चलूं, कैसे ठहरूं, कैसे बैठूं, कैसे सोऊं, कैसे बोलूं, जिससे पाप कर्म का बंधन न हो।

बोध-कथा

न्याय का धर्म

राजा भोज के सामने एक बार भारी समस्या आ खड़ी हुई। कुछ लोगों ने राजा को सुझाया कि राज्य का अपना एक धर्म होना चाहिए। राजा ने विभिन्न धर्म-समुदायों के प्रतिनिधियों को बुलाया और एक कमरे में बंद कर दिया, फिर उनसे एक राजधर्म बनाने का आग्रह किया। उन्हें निर्देश दिया गया कि वे आपस में विचार-विमर्श करें और सहमति के साथ बिंदु तलाशें। इस निर्देश के बाद बहस का दौर शुरू हो गया। सभी अपने-अपने तर्क पेश करने लगे और अपने धर्म तथा समुदाय को श्रेष्ठ बताने लगे। लेकिन उनमें आपसी सहमति नहीं बन पाई। सारे धर्मगुरू परेशान हो गए। वे अपनी मुक्ति के लिए छटपटाने लगे। लेकिन राजा भोज ने कहा कि उन्हें यहां से छुटकारा तभी मिलेगा जब वे सहमत हो जाएं और एक धर्म तैयार कर लें।

पूरे राज्य में धर्मगुरुओं को इस तरह कैद किए जाने की खबर फैल गई। सुराचार्य नामक संत को धर्मगुरुओं के इस संकट का समाचार मिला तो वह राजा के पास पहुंचे और बोले- 'राजन्, शहर में एक ही वस्तु की सैकड़ों दुकानें हैं। हर दुकानदार अपने सामान को अच्छा बताता है। इससे ग्राहक संशय में पड़ जाता है कि वह किसे खरीदे और किसे छोड़ दे। यदि एक ही दुकान रहेगी तो यह दुविधा नहीं रहेगी।' इस पर राजा ने कहा- 'आपका कथन सही है। पर क्या यह संभव है? क्या इससे अराजकता नहीं फैल जाएगी?' सुराचार्य बोले- 'फिर आप सभी धर्मों को एक करने पर क्यों तुले हो? हर एक की अपनी आस्था है, अपनी रुचियां हैं। हर प्राणी अपने धर्म के अनुसार ही नियमों का पालन करता है। अलग-अलग धर्म और समुदाय होने के बाद भी मनुष्य एक-दूसरे से जुड़ा रहता है। आप सभी मत-मतांतर का आदर करें, उन्हें विकसित होने का अवसर दें। यही आपका कर्त्तव्य है। आप एक अलग धर्म तलाश करने की जिद छोड़ दें।' राजा को अपनी गलती का अहसास हो गया। उसने सभी धर्मगुरुओं को मुक्त कर दिया।

शाश्वत स्वर

बच्चों को बांधें नहीं, उन्हें आजाद करें

किसी भी दायरे में न बंधने का हर व्यक्ति का स्वभाव होता है! लेकिन अपने वाले उसको सीमाओं में बांधने का भरसक प्रयास करते हैं! बच्चे के जन्म के साथ ही हम उसे अपने धर्म से बांध देते हैं! क्या कभी उसके बड़े होने पर हम यह कहने की हिम्मत जुटा पाते हैं कि तुम यह धर्म बदल कर अपनी मर्जी का धर्म चुन लो? हम चाहते हैं कि हमारा बच्चा हमारी ही भाषा सीखे! जबकि बचपन से ही उसे ऐसी दूसरी भाषा सिखाई जा सकती है, जो जिंदगी में उसके ज्यादा काम आए। लेकिन डर रहता है कि कहीं वो बड़ा होकर हमसे दूर न चला जाए! ऐसे ही, पत्नी अपने पति को और पति अपनी पत्नी को दोनों हमेशा अपने ही खयालों के अनुरूप दूसरे को बांधने की कोशिश करते हैं!

बंधन हमें कभी भी बड़ा नहीं बनाता, हमेशा छोटा बनाता है। वह हमारी बुद्धि को विशाल नहीं, बल्कि सीमित करता है। जबकि हमारे भीतर सब कुछ जानने की लगन होनी चाहिए। दुनिया के सभी धर्मों में जो भी अच्छी बातें हैं, वो सीखनी चाहिए। जैसे भरत नाट्यम से लेकर बैले तक, जो भी डांस होता है, वो देखें, उसकी खूबसूरती को सराहना जानें और वह नृत्य सीखें।

स्टेज नाटक से लेकर ओपेरा तक सब पता हो। अवधी से ले कर फ्रेंच तक सबको जानने की ललक हो। संगीत हो या आर्ट, भारतीय हो या पाश्चात्य सब के लिए समान भाव से उत्सुक रहें। सभी खेलों की जानकारी हो। हमें किसी भी संस्कृति से अछूता नहीं रहना चाहिए।

दुनिया में जो भी बेस्ट से बेस्ट कल्चर है, उसको अपनाना चाहिए! ये सब नामुमकिन नहीं, लेकिन इसमें हमारी कूप मंडूकता (कुंए के मेंढक वाली सोच) बाधक बन जाती है। छोटे से दायरे में देखने की हमारी आदत हमें दूर-दूर तक देखने नहीं देती। जबकि संसार जितना हम देखते हैं, जितना हम सोचते हैं- यह सिर्फ उतना ही नहीं है... यहां हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की हजारों संभावनाएं छिपी हैं। बस आपको अपना नजरिया व्यापक और विशाल करना होगा! हमें अपने बच्चों को भी जीवन में सभी संभावनाओं के बारे में बताना होगा! ताकि वो और ऊंचाइयों को देख सकें और उन्हें छूने की कोशिश कर सकें।

सदगुरु असल में शिष्य की सभी संभावनाओं को देख कर उसको सीमाओं से बाहर निकालता है। लेकिन माता-पिता बच्चों को बांधने की कोशिश में रहते हैं, क्योंकि बुढ़ापे में उनको सहारे की जरूरत होती है। वे सोचते हैं कि यदि बच्चा हमारा सहारा नहीं बना तो बुढ़ापे में कठिनाई होगी! और इस सोच की वजह से मां-बाप खुद तो बुढ़ापे में निराधार बनते ही हैं, बच्चे को भी उसे बचपन में कमजोर बना देते हैं। वे बच्चे को इतना प्रोटेक्शन देते हैं, इतना खयाल रखते हैं कि आगे खुद संघर्ष करने और अपने पैरों पर खड़े होने की उसकी ताकत कम हो जाती है। बच्चा जितना निराधार हो, उसका उतना ही ज्यादा विकास होगा। यह एक्सरसाइज है, जो हमारे राईट ब्रेन को विकसित करने का तरीका है। इसके विकसित होने से हम स्वयं नई खोज करते हैं- कला, संगीत, साहित्य, प्रेम और अध्यात्म के क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं। हम स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं- पूरे देश की आजादी का समारोह। लेकिन वह दिन कब आएगा, जब स्वेच्छा से अपने बच्चों को अपने बंधनों से आजाद करेंगे?

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

अहिंसा और शाकाहार : पूरब बनाम पश्चिम

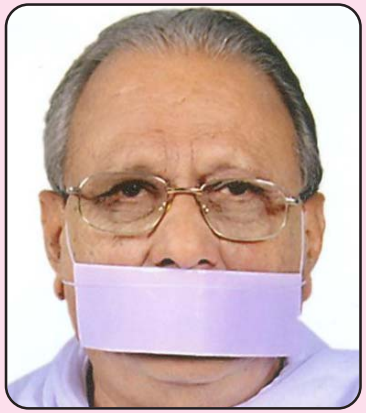

क्रोयडन, सर्रे, लन्दन के जैन सेंटर में परिवर्तित विशाल चर्च में प्रवचन के बाद मेरा आहार-कार्यक्रम था यंग इंडियन वेजिटेरियंस संस्था के अध्यक्ष श्री नितिन मेहता के खूबसूरत घर पर। नितिन भाई बिल्कुल युवा हैं, निजी व्यापार में व्यस्त होते हुए भी शाकाहार के प्रचार की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील हैं। इनके ही निर्देशन में यह संस्था कई देशों में अहिंसा और शाकाहार के लिए जन-जागरण का कार्य कर रही है। आहार के पश्चात् प्रसंगवश नितिन भाई ने कहा- हम पूरे विश्व में अहिंसा और शाकाहार का प्रचार करना चाहते हैं। यूरोप, नॉर्थ अमेरिका आदि देशों में लोगों की ओर से हमें अच्छा उत्साहवर्धक रिस्पोंस भी मिल रहा है। किन्तु जब भी भारत जाना होता है, वहां की पार्टियों में बढ़ते हुए मांसाहार को देखता हूं तो मन उदास हो जाता है। इतना ही नहीं, जब मैं खाने-पीने वाली पार्टी में भाग लेने से इंकार करता हूं तो वे लोग हम पर विश्वास तो करते ही नहीं हैं, व्यंग्य-बाणों से दिलों को घायल और कर देते हैं। यह दुख तब और बढ़ जाता है जब जैनियों की पार्टियों में भी मैं शराब और मांसाहार धड़ल्ले से चलते हुए देखता हूं। आखिर समाज को हो क्या गया है? हजारों-हजारों मुनिवरों, उपाध्यायों और आचार्यों के उपदेशों का असर विपरीत दिशा में ही क्यों जा रहा है? अपनी गौरवमयी परंपरा की ओर समाज का ध्यान कब और कैसे जाएगा?

इन प्रश्नों का उत्तर वे मेरे से चाहते हैं। मैं भारत के संत-समुदाय से जुड़ा हूं, समाज से भी जुड़ा हूं। मुनि-जीवन के साठ से भी अधिक वर्ष संतों-आचार्यों के बीच ही गुजारे हैं। समाज के अग्रणी नेताओं से लेकर जन-साधारण के बीच भी रहा हूं, इसलिए संतों-आचार्यों और समाज से जुड़े प्रश्नों का उत्तर पश्चिमवासी व्यक्ति मुझसे चाहें, यह स्वाभाविक भी है। उत्तर भी कोई कठिन नहीं है, बहुत साफ है। फिर भी मैं कुछ क्षणों के लिए गम्भीर हो जाता हूं। सोचता हूं, क्या उत्तर दिया जाए?

आखिर अपना मौन तोड़ते हुए मैं कहता हूं- आपका यह आकलन सही है कि भारतीय समाज का खान-पान बिगड़ता जा रहा है। जैन समाज भी इससे अछूता नहीं है। आप इसका कारण जानना चाहते हैं। इसका प्रमुख कारण है हमारी मानसिक गुलामी। भारत

को राजनैतिक गुलामी से मुक्ति भले ही मिल गई हो, मानसिक रूप से यह आज भी पश्चिम का गुलाम है। वह आज भी गोरों को अपने से श्रेष्ठ (Superior) मानता है। इसीलिए अपना खान-पान, रहन-सहन, शिक्षा और संस्कृति के गौरव को न पहचानते हुए वह पश्चिम की अंधी नकल करने में लगा है। यह वैचारिक/सांस्कृतिक प्रदूषण जो पहले महानगरों तक ही सीमित था, अब नगरों, छोटे नगरों, मंडियों और कस्बों तक फैलता जा रहा है। वहां के बच्चे अब मातृभाषा और राष्ट्रभाषा की बजाए इंग्लिश में बोलने में गौरव का अनुभव करते हैं। बच्चे ही नहीं, माता-पिताओं का भी यही हाल है। दिल्ली महानगर का तो यह हाल है कि ऐसे परिवार भी मेरे सामने हैं, जिनके बच्चे हिन्दी पढ़ना-लिखना तो दूर, समझते भी नहीं हैं। केवल इंग्लिश ही उनकी भाषा है, इंग्लिश ही उनका पहनावा है, इंग्लिश ही उनका भोजन है, और इंग्लिश-स्टाइल ही उनकी पार्टियां होती हैं। यदि पार्टियां पश्चिम-शैली की हैं, उसमें भाग लेने वालों की भाषा/पहनावा पश्चिम शैली का है, तो उसका भोजन, उसका नाच-गान और उसके रस्मो-रिवाज तथा तेवर पर पश्चिमी प्रभाव हो, इसमें आश्चर्य ही क्या है?

किन्तु ये सब हैं अभी तक धनाढ्य तथा नव-धनाढ्य परिवारों में ही, यह भी हमें नहीं भूलना है। आज यदि इन पर यहीं अंकुश लग जाए तो स्थितियां बिगड़ने से बच सकती हैं। किन्तु अर्थ-प्रधान व्यवस्था में इन धनाढ्यों और नव-धनाढ्यों पर अंकुश लगाए तो कौन? यहां आते-आते संत-पुरुषों और धर्माचार्यों पर हमारी नजर जाती है। संत-पुरुष और धर्माचार्य अपने उपदेशों में अहिंसा, शाकाहार, खान-पान-शुद्धि और अपनी समृद्ध परंपरा और गौरवमयी संस्कृति पर कायम रहने के लिए समाज को समय-समय पर प्रेरणा भी देते है। फिर भी समाज के कदम विपरीत दिशा में ही जा रहे हैं, उन उपदेशों का कोई असर नहीं है अथवा न-के बराबर है। इसके भी कई कारण हैं। उन कारणों को समझने के लिए हमें निर्मम-भाव से इसकी शल्य-चिकित्सा करनी होगी।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मैं कहता हूं- समस्त संत-पुरुषों और धर्माचार्यों के प्रति पूर्ण सम्मान प्रकट करते हुए और विनम्रता से क्षमा मांगते हुए मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हमारे प्रभावशाली संत-पुरुषों और आचार्यों में से अधिकांश ऐसे हैं जो अपनी ही महत्त्वाकांक्षाओं और उच्चाकांक्षाओं के शिकार हैं। उन्हें अपनी पुस्तकों का उत्तम साज-सज्जायुक्त प्रकाशन चाहिए, चाहे वे पुस्तकें क्रीत-लेखकों से ही लिखवाई गई हों। उन्हें किसी-न-किसी बहाने बड़े तामझाम वाले भव्य आयोजन चाहिए, राजनेता चाहिए, प्रेस-पब्लिसिटी चाहिए, टी.वी. तथा रेडियों पर प्रचार चाहिए, समाज तथा राष्ट्रीय स्तर पर

सम्मान चाहिए, अपने यश, सम्मान, पद और कीर्ति के लिए, पता नहीं उन्हें और भी क्या-क्या चाहिए?

राजाओं/महाराजाओं का युग बीत चुका है। किन्तु ऐसे लगता है कि धर्म-क्षेत्र में राजाओं/महाराजाओं का युग अब शुरू हुआ है। विभिन्न समारोह के नाम से होने वाले एक-एक आयोजन पर समाज के लाखों-करोड़ों रुपये खर्च हो जाएं, जैसे कि राजतंत्र में युवराज के राज्याभिषेक पर असीमित धन व्यय होता था, तो क्या नहीं मान लेना चाहिए कि वे राजे-महाराजे अब धर्म-क्षेत्र में पैदा हो गए हैं? राजतंत्र में भी ऐसे खर्चीले समारोह की चर्चा-आलोचना दबी जुबान में हो जाती थी। किन्तु धर्म-भावना और शासन-प्रभावना के नाम यहां जन-साधारण की श्रद्धा/भावना के साथ पूरा खिलवाड़ किया जाता है। इसलिए कोई आवाज उठाने का साहस भी नहीं कर पाता है। इन सबकी पूर्ति के लिए जो धन और साधन चाहिएं, वे सब कहां से आएंगे? वे सब इन्हीं धनाढ्यों और नव-धनाढ्यों से ही तो आएंगे। उन महत्त्वाकांक्षाओं और उच्चाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए जो वर्ग धन और साधन देगा, उसे फिर आपको समाज का ऊंचा आसन भी देना होगा, ऊंचा पद भी देना होगा, सम्मान भी देना होगा। उस स्थिति में उन उपदेशों का असर कैसे रह पाएगा? समाज की मर्यादाओं और सांस्कृतिक मूल्यों का सम्मान कैसे संभव होगा? शायद वे ही ये कारण हैं जो समाज में फैल रही अपसंस्कृति के विस्तार को रोक नहीं पा रहे हैं। व्यक्ति की धन-शक्ति और समाज की साधन-शक्ति पर जब मर्यादा का अंकुश नहीं रह पाता है, तब हर युग में धर्म और अध्यात्म को इन्हीं परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जैसा कि हम आज अपनी आंखों के सामने यह सब कुछ देख रहे हैं।

तो क्या खान-पान, रहन-सहन और आचार-विचार में बढ़ रही अपसंस्कृति की रोकथाम संभव नहीं है? इस व्यापक प्रश्न को एक बार खान-पान तक सीमित करते हुए, क्योंकि मेरा कार्यक्षेत्र प्रमुखतः शाकाहार-प्रचार है, अगर भारत में भी इस दिशा में कुछ किया जाए तो क्या कुछ संभावनाएं आपको नजर आती हैं, नितिन भाई का अगला प्रश्न था। संभावनाएं सदा रहती हैं, सदा रहेंगी भी, मैंने कहा। किन्तु देखना यह होता है कि संभावनाओं के द्वार पर लगे ताले को किस चाबी से खोला जाए। पूरब के पास अनंत संभावनाओं का खजाना है। दुर्भाग्यवश आज वह उससे अनजान बना हुआ है। अपने को भिखारी मानकर वह पश्चिम की ओर निहार रहा है, सौभाग्यवश पश्चिम उस खजाने का मूल्य समझने लगा है। अतः पूरब को अपने खजाने का परिचय देने के लिए हमें पश्चिम की चाबी को काम में लाना होगा। यदि ऐसा हुआ तो भारत अपनी महान विरासत से

परिचित भी होगा और अपनी मानसिक गुलामी से भी मुक्त हो सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। और यह कार्य अब हम लोगों को करना होगा। हमें भारत को बताना होगा- जिस अहिंसा और शाकाहार को आप भूलते जा रहे हैं, उसके पीछे दीवाने की तरह पश्चिम की पूरी जीवनशैली में ही एक नई क्रांति घटित हो रही है। अगर हम ऐसा कर पाए तो बकरियों के संग में रहने से अपने सिंहत्व को भूला हुआ शेर अपनी सही पहचान पाकर फिर सिंह-गर्जना के साथ उठ खड़ा होगा, नितिन भाई, ऐसी मेरी निश्चित धारणा है

अहिंसा के अवतरण का युग

आज पूरब को यह सूचना देते हुए मुझे गर्व और गौरव का अनुभव हो रहा है कि पश्चिम के इतिहास में शायद यह युग अहिंसा के अवतरण का युग कहलायेगा। पिछले तेतीस वर्षों की यात्राओं में मैं निरंतर देख रहा हूं कि पश्चिम में अहिंसा और शाकाहार के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है, एक नव-जागरण का युग उदित हो रहा है और पश्चिम समाज में अहिंसा और शाकाहार को सम्मान की नजरों से देखा जाने लगा है। जीवन के व्यवहारों में अब यहां पर अहिंसा और अनुकंपा/दया का सहज समावेश होने लगा है। 27 मई, 1995 की घटना है। न्यूयार्क की एक घनी बस्ती में एक भालू जंगल से भटककर आ गया। जैसे आदमी जंगल में भटक जाए, तो वह घबराकर इधर-उधर भागने लगता है। वही हाल बस्ती में उस भालू का था। वह भयभीत होकर बेतहाशा एक घर से दूसरे घर तथा एक छत से दूसरी छत पर दौड़ने लगा। सारी बस्ती में भागमभाग मच गई। लोग भालू से डर रहे थे तथा भालू लोगों से। अंततः एक व्यक्ति ने बन्दूक से भालू पर निशाना दागा। दूसरे ही पल वह भालू जमीन पर लुढ़क पड़ा। लोगों ने उसे उठाया और दूर जंगल में छोड़ आए। अब भालू बहुत खुश था अपनी बस्ती में आकर। क्योंकि बन्दूक से छोड़ी गई गोली मारने के लिए नहीं, उसे नशा दिलाकर बेहोश करने के लिए थी।

जब यह घटना हुई, मैं जैन सेंटर ऑफ सिनसिनाटी एण्ड डैटन के उद्घाटन समारोह पर आशीर्वाद देने के लिए डैटन में था। सेंटर के प्रमुख पदाधिकारी श्री प्रेम जैन से यह घटना सुनकर मैं आश्चर्यचकित था। इस देश की संस्कृति के संदर्भ में इस घटना के दो पहलू अद्भुत हैं। पहला- भालू को मारने के लिए नहीं, उसे बेहोश करने के लिए गोली चलाना। दूसरा- उसे सुरक्षित अवस्था में वापस जंगल में छोड़ आना। यहां की संस्कृति हिंसा-प्रधान रही है। यहां बड़ों के ही नहीं, बच्चों के हाथ में भी पिस्टल रहती है। जरा-जरा-सी बात पर पिस्टल चल जाना बहुत साधारण है। वहां एक पागल-सा भालू बस्ती में आ जाए, तो उसे नहीं मारना और अपने जीवन के साथ-साथ उसके जीवन की रक्षा

करते हुए उसे जंगल में छोड़ कर आना, अहिंसा की दिशा में क्या यह असाधारण कदम नहीं? जबकि भारत जैसे अहिंसा-प्रधान देश में अगर ऐसी घटना हुई होती, तो मुझे संदेह है कि वह भालू जीवित रह गया होता।

यहां हमें यह भी समझना है कि यह घटना आकस्मिक नहीं है। किन्तु यह एक नई संस्कृति के उदय का परिणाम है। मेरे मुख पर पट्टी देखकर आज तक सैकड़ों अमेरिकियों ने मेरे से प्रश्न किया होगा। जब मैं उसके उत्तर में अहिंसा की बात करता हूं, तो वे अहिंसा के प्रति न केवल अपना आदर प्रकट करते हैं, किन्तु वे अहिंसा को ही शांति का एकमात्र रास्ता मानते हैं। और अहिंसा में ही मानव-जाति का भविष्य देखते हैं। पश्चिम को यह अच्छी तरह समझ में आ गया है कि अगर पशु-पक्षी बचेंगे तो आदमी बचेगा, पर्वत-नदियां-जंगल बचेंगे तो आदमी बचेगा, पेड़-पौधे और वनस्पति-जगत बचेगा तो आदमी बचेगा। अगर आदमी को बचाना है, आदमी के भविष्य को बचाना है, तो जंगल-पर्वत-नदियां, पशु-पक्षी और पेड़-पौधे इन सबको बचाना ही होगा, क्योंकि विश्व का पूरा जीवन एक-दूसरे के सहयोग पर ही टिका है। एक है तो दूसरा है। एक नहीं तो दूसरा नहीं। सच्चाई यह है कि यहां समग्र अस्तित्व एक ही है। इसलिए कोई दूसरा ही नहीं। किसी को दूसरा मानना ही हिंसा है। अहिंसा की इसी समझ में से प्रकट हुई है भालू की यह घटना, जो साधारण होते हुए भी असाधारण है। शायद इसीलिए टी.वी. के अनेक चैनलों पर पूरे विस्तार से इसका प्रसारण किया गया था।

अहिंसा और भगवान महावीर

पश्चिम-जगत आज जिस सच्चाई के आमने-सामने खड़ा है, भगवान महावीर ने हजारों वर्ष पहले उसके लिए उद्घोषणा कर दी थी- परस्परोपग्रहो जीवानां- परस्पर उपग्रह, परस्पर सहयोग पर टिका है हमारा जीवन। इसलिए किसी को मारो मत, किसी को सताओ मत, किसी को गुलाम मत बनाओ, किसी का अपमान मत करो, किसी की उपेक्षा मत करो। किसी को मारना अपने को ही मारना है। किसी को सताना अपने को ही सताना है। गुलाम गुलाम नहीं है, वास्तव में मालिक ही गुलाम है। किसी का अपमान अपना अपमान है। किसी की उपेक्षा अपनी उपेक्षा है। संक्षेप में, किसी की हिंसा अपनी हिंसा है। क्योंकि जीवन एक है। उस जीवन की एकता का अनुभव होना ही अहिंसा है। उस अस्तित्व का सम्मान करना ही अहिंसा है।

जब से पश्चिम भगवान महावीर के इस अहिंसा-दर्शन से परिचित हुआ है, उसके मन में जैन-धर्म के प्रति बहुत सम्मान बढ़ा है। कहना चाहिए, पश्चिम में जैन शब्द अहिंसा

का पर्याय-जैसा बन गया है। वैसे तो हर धर्म ने अहिंसा को स्वीकार किया है। किन्तु शाकाहार, पर्यावरण-सुरक्षा, अहिंसा की बारीकियां तथा पिछले हजारों वर्षों के इतिहास में अहिंसा की रक्षा तथा हिंसा के साथ किसी भी कीमत पर समझौता न करने की दृढ़ता जितनी जैन समाज ने दिखाई है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। इन सब कारणों से पूरे विश्व में अहिंसा की चर्चा जहां भी होती है, उसमें जैनों का नाम अग्रगण्य है। इसीलिए ऐसी धर्म-चर्चाओं, गोष्ठियों और सम्मेलनों/समारोहों में जैन-प्रतिनिधित्व को गौरवमयी दृष्टि से देखा जाता है।

6 मई, 1995 की घटना है। रोमन कैथोलिक संप्रदाय के विख्यात पादरी फादर लुइस एम.डोनल के प्रिस्टुड के पचास वर्ष पूरा होने पर सेंट अमरिक्स चर्च, मेनहट्टन, न्यूयार्क ने एक गोल्डन जुबली समारोह आयोजित किया। इसी संदर्भ में चर्च ने जैन समाज से निवेदन किया कि यदि कोई जैन मुनि इस अवसर पर सम्मिलित हो सकें तो उन्हें प्रसन्नता होगी। अपने उदार विचारों और मिलनसारिता के कारण फादर डोनल यहां सभी धर्म-संप्रदायों में आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। मैं उस समारोह में जैन मुनि के रूप में सम्मिलित हुआ। उस आयोजन में सम्मिलित हर सदस्य ने देखा कि एक जैन मुनि की उपस्थिति और उनके प्रवचन को कितना विशिष्ट महत्त्व दिया गया। कार्यक्रम के अनंतर फादर डोनल ने मुझे आहार-ग्रहण का आग्रह किया। मेरी विनम्र अस्वीकृति पर वे बोले- आप संकोच न करें। हमने आपके लिए विशेष शाकाहार-भोजन की अलग से व्यवस्था की है। इन शब्दों के साथ जुड़ा सम्मान-भाव उनके चेहरे पर साफ झलक रहा था। मैंने धन्यवाद देते हुए कहा- फिर भी आहार संभव नहीं है। क्योंकि अब सूर्यास्त हो गया है। जैन मुनि रात्रि-भोजन नहीं करते। मैंने देखा, फादर डोनल ही नहीं, उनके साथ उपस्थित सभी महानुभाव जैन-धर्म की अहिंसा और तप-साधना के प्रति आश्चर्य से अभिभूत थे।

स्वर्णिम भविष्य है अहिंसा का

पश्चिम में शाकाहार और अहिंसा के प्रति जो श्रद्धा और सम्मान की भावना जागृत हुई है, वह सबकुछ अनायास ही नहीं हो गया है। इसके लिए पश्चिम में आने वाले संत-पुरुषों, साधकों, विद्वानों और जागरुक श्रावकों ने बड़ी तपस्या और साधना की है। जो मांसाहार आज से बीस वर्ष पहले जैनियों की पार्टियों में ही नहीं, किचन तक में घुस गया था, पश्चिम देशों में संत-पुरुषों के आगमन के बाद न केवल वह जैन समाज अपने धर्म और आचार-नियमों पर दृढ़ हुआ है, उसने पूरे अमेरिकन जन-जीवन पर अहिंसा और शाकाहार का गहरा प्रभाव छोड़ा है।

आज मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि भारत से भी अधिक, पश्चिम के जैन-समाज की पार्टियां तथा रसोईघर शुद्ध और शाकाहार का ख्याल रखते हैं। इतना ही नहीं, उस शाकाहार ने अब होटलों, रेस्टोरेंटों, कालेज और यूनिवर्सिटी की पार्टियों, एयरलाइंस के मीनू और चर्चों की पार्टियों तक में प्रवेश पा लिया है। और इसी कारण जो शाकाहार पहले मार्केट में बड़ी मुश्किल से मिलता था, आज वह बड़े नगरों में ही नही, छोटे-छोटे कस्बों तक पहुंच गया है। शाकाहारी लोगों का प्रतिशत हर वर्ष तेजी से बढ़ता जा रहा है। अमेरिका के केलिफोर्निया जैसे स्टेट में शाकाहार बीस प्रतिशत तक बढ़ गया है। भारत में भी शाकाहार का इतना प्रतिशत होने में मुझे संशय है। शाकाहार के इस प्रभाव के पीछे जैन संतों के साथ-साथ हिन्दू संतों का भी अच्छा योगदान रहा है। यहां के मेडिकल साइंस ने भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, जिसे हम नजरअंदाज नहीं कर सकते।

शाकाहार के साथ-साथ साबुन, कपड़ा धोने के पाउडर, शरीर को संवारने वाली प्रसाधन-सामग्री, बेग और अटैचियां, जूते और कार-सीटों तक के लिए यह जागृति आ रही है कि अहिंसक साधनों से निर्मित ही ये सब काम में लिये जाएं। जैन सेंटरों से प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं में उन विज्ञापनों तक से परहेज किया जाता है, जिनका सम्बंध किसी भी प्रकार की पशु-हिंसा से जुड़ा है। पशु-हिंसा के विरोध में तथा पशु-अधिकार के समर्थन में अनेक अमेरिकन संस्थाएं प्रभावशाली ढंग से काम कर रही हैं। चिकित्सा-विज्ञान में होने वाली हिंसा, चाहे फिर वह दवाओं के परीक्षण के लिए हो अथवा चिकित्सा-अध्ययन के लिए हो- के विरोध में भी स्वर उठने लगे हैं। इन सबको देखते हुए कहा जा सकता है कि पश्चिम में अहिंसा-जागरण की दिशा में अनंत संभावनाएं दस्तक दे रही हैं, अहिंसा का भविष्य स्वर्णिम है। भारत में जो हो रहा है, हिंसा, पशुवध और मांसाहार की नारकीय दिशा में, हजारों-हजारों धर्माचार्यों और संत-पुरुषों की उपस्थिति के बावजूद, जिस तेजी से देश के कदम बढ़ रहे हैं, उससे लगता है किसी दिन पश्चिम ही सिखाएगा पूरब को पाठ अहिंसा और शाकाहार का, पश्चिम से ही पूरब अपनी गौरवमयी परंपरा और आकाश को छूने वाली महान संस्कृति की पहचान पाएगा। अभी तो वह अपनी मानसिक गुलामी की जंजीरों को आभूषण मानकर सजा रहा है अपने शरीर को। न जाने कब वह इन जंजीरों से मुक्त होगा, कब तक?

क्रोध को क्षमा से, अभिमान को विनमता से,
माया को सरलता से तथा लोभ को संतोष से जीतें।

कविता-सुमन

पूज्या साध्वी मंजुलाश्री

युगपुरुष आचार्यश्री रूपचन्द्रजी के जन्मदिवस पर विशेष

भारत की पावन धरती पर।
युग पुरुष तुम्हारा अभिनन्दन।।
इस मातृ-भूमि की माटी से।
कर तिलक बधाएं जन नन्दन।।

हे शांतिदूत! ले विश्व शांति।
सन्देश धरा पर घूम रहे।।
हे धर्म दूत! तुम धर्म ध्वज।
फहराने नभ को चूम रहे।।
हे भारत माता के सपूत।
भारत की पावन संस्कृति को।।
देकर प्रबोध इस दुनियां को।
अपनी मस्ती में झूम रहे।।
तेरे अमोल अवदानों पर।
न्यौछावर प्रकृति का कण-कण।।

जा देश-विदेशों में तुमने।
मूर्छित मानव को झकझोरा।।
मंदिर मस्जिद गिरजे में बंद।
धर्म को जीवन से जोड़ा।।
दिखलाओ राह उन्हें अब जो।
गुमराह हुए सब कुछ तोड़ा।।
हिंसा की लपटों में झुलसे।
मानव को चैन मिले थोड़ा।।
महावीर बुद्ध के हे वंशज।
नत मस्तक सब करते वन्दन।।

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

शक होता है जिसको अपने चेहरे पर ही
वो ही बार-बार दर्पण देखा करता है।

जिसका मोल सिर्फ अखबारी कतरन जितना
वह अपना ही विज्ञापन देखा करता है।

अपने ही तप-साधन पर संशय है जिसको
वो ही औरों का अर्पण देखा करता है।

जिसको नहीं भरोसा अपने पंखों पर ही
वह आकाशी सपन सदा देखा करता है।

जिसे जिंदगी जीना आया नहीं ठीक से
वह पग-पग बेचैन कफन देखा करता है।

नहीं सम्हल पाता है अपना दिल ही जिससे
दिल को थाम वही धड़कन देखा करता है।

क्या खोया क्या पाया

कुछ पा और कुछ खो देना मानव मन की सबसे बुनियादी अनुभूतियां हैं। बच्चों को कोई नया काम सिखाने के लिए हम इन्हीं अनुभूतियों का सहारा लेते हैं और बड़ों के साथ हमारे रिश्ते भी कमोबेश इन्हीं के जरिये संचालित होते हैं। लेकिन मामला जब यह तय करने का होता है कि हमारा कौन सा नुकसान किसी और नुकसान से कम है, या कौन सा फायदा किसी और फायदे से ज्यादा है, तो वहां कन्फ्यूजन देखने को मिलता है। आम तौर पर हम अपने पाने-खोने को संख्याओं के जरिये मापते हैं। 15 हजार का टीवी 13 हजार में मिल गया तो फायदा और 10 रुपया किलो जाने वाला रद्दी अखबार साढ़े नौ रुपया किलो बेचना पड़ जाए तो नुकसान। लेकिन गौर से देखें तो बहुत छोटे नुकसान हमें इतनी ज्यादा तकलीफ देते हैं कि उनसे काफी बड़े फायदे भी उनकी भरपाई नहीं कर पाते। सचाई यह है कि खोने-पाने की अनुभूतियों की संख्याओं में नहीं बांधा जा सकता। एक हद के बाद इन्हें समझने और इनसे निपटने के लिए हमें दूसरी रणनीतियां अपनानी पड़ती हैं, जिनका अभ्यास समय रहते शुरू कर देना चाहिए। **-प्रस्तुति : साध्वी पद्मश्री**

आचार्यश्री रूपचन्द्रः एक बहुआयामी व्यक्तित्व

○ साध्वी कनकलता

भारत की आध्यात्मिक विभूतियों में एक नाम है पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी महाराज, जिन्होंने भारतीय संस्कृति, धर्म समन्वय तथा साधना सेवा के शाश्वत मूल्यों को न केवल भारत में किंतु अमेरिका, कनाडा, इग्लैंड, स्वीडन आदि देशों में प्रसारित करके संपूर्ण आध्यात्मिक जगत में अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। दिनांक 22 सिंतबर 1939 को आपका जन्म सरदार शहर राजस्थान में हुआ। आपके पिताश्री का नाम श्रीमान जयचंदलालजी तथा मातुश्री का नाम श्रीमती पांचीदेवी सिंघी है। आपमें एक कवि की संवेदना संत की करूणा, मनीषी की पारमिता दृष्टि तथा प्रेम सेवा की निर्मलधारा विविध रूपों में प्रवाहित होती रही है।

लगभग तेरह वर्ष की उम्र में आपकी मुनि दीक्षा महान् यशस्वी युग-प्रधान आचार्य श्री तुलसी के कर कमलों से सरदार शहर मे ही संपन्न हुई। आप उस समय आठवीं कक्षा के छात्र थे। दीक्षा के पश्चात आपने संस्कृत, प्राकृत, पाली, इंगलिश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं के साथ-साथ साहित्य दर्शन, विज्ञान, मनोविज्ञान तथा विश्व धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया। भगवान महावीर की वाणी, वेद-उपनिषद, भगवत्-गीता, रामचरित्र मानस, बुद्धवाणी बाइबिल आदि धर्म ग्रंथों के हजारों पद आपकी स्मृति में कम्प्यूटर की तरह अंकित है।

अपने जन जागरण अभियान में आपने संपूर्ण भारत तथा नेपाल में लगभग पचास हजार किलोमीटर की पद-यात्राएं करके मानव धर्म के सार सूत्रों को घर-घर में पहुंचाने का भागीरथ प्रयत्न किया है। इस संदर्भ में आपके सान्निध्य में होने वाले आयोजनों समारोहों एवं संगोष्ठियों में देश के शीर्षस्थ राजनेता-गण जैसे महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, श्री वेंकटरामण, डॉ. शंकरदयाल शर्मा, श्रीमती प्रतिभा पाटिल तथा प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री मोरारजी देसाई, श्री राजीव गांधी एवं नेपाल के प्रधानमंत्री श्री मातृकाप्रसाद कोइराला आदि के साथ-साथ अनेक केन्द्रीय मंत्री तथा अन्य मंत्री गण समय समय पर भाग लेते रहे हैं।

राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, डॉ. शंकर दयाल शर्मा तथा श्रीमती प्रतिभा पाटिल तो आपकी साहित्यिक कृतियों विशेषतः कविता साहित्य के दीवाने रहे है, और आपकी अनेक पुस्तकों का लोकार्पण आप के हाथों से हुआ है।

विश्व विख्यात आदरणीय आचार्य श्री तुलसी के आप प्रियतम शिष्य रहे ही है, इसके साथ ही महान दार्शनिक जे.कृष्णमूर्ति, पांडीचेरी अरविंद आश्रम की श्री मां आनंदमयी, ओशो

रजनीश, बौद्ध धर्म-नेता श्री दलाई लामा श्री बिनोबा भावे, श्री गोपीनाथ कविराज, सेवा मूर्ति मदर टेरेसा, विपश्यना आचार्य श्री गोयनका, आचार्य सुशील मुनि आदि के साथ आपका निकट संपर्क तथा अत्यंत आत्मीय वातावरण में साधना सेवा परक विषयों पर विचार विनिमय होता रहा है।

भारत की साहित्य सम्पदा की श्री वृद्धि में भी आपका महत्वपूर्ण अवदान है। गद्य एवं पद्य साहित्य में आपकी दो दर्जन कृतियां अब तक प्रकाशित हो चुकी है। उन पुस्तकों में सुना है मैंने आयुष्मन, मैं कहता आंखन देखी,महावीर मार्क्स और गांधी, अहिंसा है जीवन का सौंदर्य विचार प्रधान गद्य संग्रह तथा अंधा चांद, खुले आकाश में, भूमा, किस संबोधन से पुकारूं, रूपायन आदि कविता-संग्रह देश विदेश में बहुत लोकप्रिय हुए है। साहित्य जगत ने आपके विचार प्रधान गद्य साहित्य तथा क्रांति धर्मी काव्य साहित्य की मुक्त कंठ से सराहना की है। आपकी अहिंसा विषयक पुस्तक के संदर्भ में सुप्रसिद्ध साहित्यकार अमृता प्रीतम लिखती है- मुनि रूपचन्द्र की आस्था जिस तरह अहिस्ता-अहिस्ता अपने अक्षरों से अहिंसा के रहस्य को खोलती है, हर रज-कण में उतरती हैं, हर जलजल कण में भीगती है, प्रलय और विनाश के अंतर को दिखाती हैं, तो कह सकती हूं कि मुनिजी की आस्था ने सचमुच वह अग्नि-स्नान किया है, जिससे वह भय मुक्त, सीमा-मुक्त और काल मुक्त हो पाई है।

सन् 2012 में सुप्रसिद्ध लेखिका डॉ. विनीता गुप्ता द्वारा आपके जीवन पर आधारित उपन्यास 'हंस अकेला' का लोकार्पण महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा हुआ। वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह उपन्यास देश-विदेश में बहुत ही लोकप्रिय हुआ है।

समाचार जगत में दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएं निरंतर प्रकाशित होती रही है। आकाश-वाणी तथा दूर-दर्शन से भी समय-समय पर आपके आलेख, वार्ताएं, तथा कविताएं प्रसारित होती रही हैं। आपकी अनेकों रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी, बंगला, कन्नड, तमिल, नेपाली, पंजाबी, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओं में हुआ है।

<u>विदेश की धरती पर धर्म का संदेश</u>

विदेश की धरती से भावभरे आमंत्रण पर आपने जैन मुनि की मर्यादाओं को विस्तार देते हुए अमेरिका, कनाडा, स्वीडन और इंग्लैंड आदि देशों में जैन धर्म भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक मूल्यों के प्रसार की दृष्टि से अनेक बार विदेश यात्राएं की है। इन यात्राओं में आपकी आत्म स्पर्शी प्रवचन वाणी से जहां हजारों की संख्या में प्रवासी भारतीय अपनी संस्कृति और धर्म पर सुदृढे हुए हैं, वहां अनेक विदेशी भाई-बहनों ने अहिंसा तथा शाकाहार का पथ अपनाया है। वे योग ध्यान अभ्यास कर रहे हैं।

आचार्यवर के जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण उपलब्धियां आंकडों में इस प्रकार है-

- तेरह वर्ष की उम्र में 15 अक्टूबर 1952 को महान् यशस्वी आचार्य श्री तुलसी के कर कमलों से तेरापंथ संप्रदाय में जैन मुनि दीक्षा।
- आवश्यक सूत्र, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन-सूत्र, 'आचारांग-प्रथम' प्रश्न व्याकरण 'संवर-द्वार' वृहत्कल्प सूत्र वत्तवार्थ सूत्र आदि आगम कंठस्थ।
- शांत सुधारस, श्री भक्तामर स्तोत्र, श्री कल्याण मंदिर, रत्नाकर पंचविशिका, अयोग व्यवच्छेदिका, अन्ययोग-यवच्छदिका, षड्-दर्शन-समुच्चय आदि जैन रचनाओं के साथ साथ पतंजलि योग-दर्शन, श्रीमद् भगवत्गीता, उपनिषदों आदि के सैंकडों पद कंठस्थ।
- संस्कृत-विद्याध्ययन में लघु कौमुदी, अष्टाध्यायी, श्री अभिधान चिंतामणि कोश तथा प्राकृत व्याकरण आदि कंठस्थ। तेरापंथ शिक्षा प्रणाली की योग्यतम एम.ए. के समकक्ष परीक्षा में प्रथम।
- संस्कृत, प्राकृत, पाली, इंग्लिश, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषाओं के साथ साथ धर्म, दर्शन सिद्धांत मनोविज्ञान तथा साहित्य का तलस्पर्शी अध्ययन।
- अग्रण्य पद-सिंतबर 1964 में आचार्य श्री तुलसी द्वारा।
- आचार्य पद-22 सितम्बर-1999, दिल्ली जैन संघ द्वारा।
- सम्मान-प्रज्ञा-पुरूष-1990 कोलकाता समाज द्वारा।
- मेन ऑफ द ईयर सन् 2004 बाइअमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट नार्थ केरोलिना यू. एस.ए.। साहित्य सृजन-धर्म दर्शन और काव्य साहित्य पर दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित। अनेक पुस्तकें देश-विदेश में अत्यंत लोकप्रिय।
- पद यात्राएं संपूर्ण भारत और नेपाल में करीब पचास हजार किलोमीटर की पद-यात्राएं। विराटनगर नेपाल चातुर्मास 1976 में आपके विचारों कार्यक्रमों से प्रभावित होकर नेपाल महाराजा श्री वीरेंद्र वीर विक्रम शाह देव द्वारा अपने मुख्य सचिव श्री रंजनराज खनाले के माध्यम से राजधानी काठमांडू पदार्पण की प्रार्थना। विदेश यात्रा सन् 1991 में अमेरिकन समाज की भाव भीनी प्रार्थना पर ज्ञान-दर्शन चरित्र की विशिष्ट आराधना की संभावना को देखते हुए विदेश यात्रा का निर्णय। इन विदेश यात्राओं से हजारों व्यक्ति सुलभ बोधि बने हैं, हजारों व्यक्ति सम्यक्त्व पर सुदृढ़ हुए हैं तथा हजारों श्रावकत्व की भूमिका पर आरूढ हुए है। आपके सान्निध्य में पर्युषण दश लक्षण आराधना में विदेश की धरती पर आज तक हजारों अठाई तप, कई मासखमण तथा अनगिन तेले संपन्न हुए हैं। न्यूजर्सी, न्यूयार्क, शिकागो, हयुष्टन, सेनफ्रांसिस्को, पीटसबर्ग, आदि महानगरों में आयोजित जैन

कन्वेंशनों में आपश्री द्वारा हृदय स्पर्शी उद्‌बोधन। अमेरिकन समाज द्वारा आयोजित धर्म-प्रसार यात्रा 1999 में एक सप्ताह में अमेरिका के सभी प्रमुख महानगरों में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए परमार्थ आश्रम ऋषिकेश के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती, यशस्वी कथा-वाचक श्री रमेश भाई ओझा, सुप्रसिद्ध गायक श्रीमती अनुराधा पौड़वाल आदि की सहभागिता। सन् 1996 में संयुक्त राष्ट्र संघ न्यूयार्क में एन.जी.ओ. विभाग द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय विश्व शांति सेमिनार तथा सर्व धर्म प्रार्थना सभा में जैने धर्म का प्रभावशाली प्रतिनिधित्व। इस आयोजन में पूरे संसार की करीब एक हजार धर्म-संस्थाओं ने भाग लिया।

साधना और सेवा कार्यों को बल देने के लिए सन् 1997 में हयुष्टन टेक्सास में इंटरनेशनल मानव मंदिर मिशन की स्थापना।

'जैन वे आफ लाइफ' शाकाहार, जीव-दया, योग-ध्यान पर अमेरिका, कनाड़ा, इंग्लैंड आदि विदेशों में अनेक शिविर, सेमिनार, प्रवचन मालाएं तथा कार्य-शालाएं आपके मार्ग-दर्शन में आयोजित हुई है।

भारत सरकार द्वारा आयोजित सिंधु दर्शन समारोह 2003 के अवसर पर लेह लद्‌दाख में विश्व धर्म संगम में आपने ही जैन धर्म का प्रतिनिधित्व किया। इस संगम में श्री शंकराचार्य, बौ. धर्म लद्‌दाख के प्रमुख विख्यात संत पुरूष, क्रिश्चियन, इस्लाम धर्म के प्रमुखों की उपस्थिति के साथ-साथ भारत सरकार के उपप्रधान मंत्री श्री आडवाणी, दर्जन भर केंद्रीय मंत्री गण, जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री आदि भी सम्मिलित।

विश्व मैत्री तथा विश्व शांति की मंगल भावना से प्रेरित कैलाश अष्टापद मानसरोवर यात्रा 2003 जुलाई में आपश्री द्वारा भगवान ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर की निर्वाण भूमि की तीर्थ यात्रा। इस यात्रा में करीब पैंतीस अमेरिकन तथा अंग्रेज श्रद्धालु, करीब एक सौ एन. आर.आई. सहित करीब दौ सो तीर्थ यात्री सम्मिलित थे। इस पावन यात्रा को आपश्री सहित भानुपुरा पीठ के शंकराचार्य स्वामी दिव्यानंद तीर्थ, परमार्थ आश्रम, ऋषिकेश के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनिजी, सुप्रसिद्ध भागवत कथाकार श्री किशोरजी व्यास, श्री रसायनी बाबा आदि द्वारा आध्यात्मिक मार्ग-दर्शन।

14 जुलाई 2003 का दिन जैन इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा जब आचार्य श्री रूपचन्द जी महाराज ने कैलाश अष्टापद की पावन तीर्थ भूमिपर सैंकड़ों देश विदेश के तीथ यात्रियों के बीच जैन ध्वज लहराते हुए श्री नवकार महामंत्र, श्री भक्तामर स्तोत्र तथा आदिनाथ भगवान की आरती के साथ तीर्थ वंदना की। प्राचीन उल्लेखों के अनुसार प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम ने अपने मंत्र-बल से इस तीर्थ भूमि पर भगवान आदिनाथ की वंदना स्तुति की थी। हमारी जानकारी के अनुसार उसके पश्चात् संभवतः आप प्रथम

जैन मुनि आचार्य हैं जिन्होंने यंत्र बल के सहारे भगवान ऋषभदेव की निर्वाण भूमि की तीर्थ यात्रा की। टी.वी चैनल संस्कार ने आज तक सैंकड़ों बार आचार्य श्री को जैन ध्वज के साथ श्री नवकार महामंत्र का संगान करते हुए कैलाश अष्टापद की तीर्थ भूमि पर दिखलाया है। यह तीर्थ-यात्रा संपूर्ण जैन समाज के इतिहास की गौरवपूर्ण घटना है।

तेरापंथ संप्रदाय की अंतरंग राजनीति से असहमति के कारण दिसंबर 1981 में करीब इक्कीस साधु साध्वियोंके साथ जयपुर मे नव तेरापंथ की स्थापना की। नव-तेरापंथ की स्थापना के समय साध्वियों का नेतृत्व साध्वी श्री मंजुला श्री जी ने किया। साध्वीश्री जी को कुछ समय पश्चात संघ ने प्रवर्तिनी पद पर बिराजमान किया। श्रावक समाज की प्रतिनिधि संस्था का नाम जैन संगम रखा गया। उपाश्रय स्थानक अथवा भवन का नाम मानव मंदिर रखा गया। कालांतर में जैन एकता को मजबूत करने के उद्‌देश्य से नव तेरापंथ शब्द का विलीनीकरण जैन शासन में कर दिया गया। इसी प्रकार समाज की प्रतिनिधि संस्था का नाम मानव मंदिर मिशन कर दिया।

वर्तमान में इस जैन संघ में ग्यारह साधु साध्वियों सात साधक साधिकाएं तथा हजारों श्रावक श्राविकाऐं हैं। इस संघ का विहार क्षेत्र प्रमुखतः दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, कोलकात्ता, मुंबई तथा गुजरात है। विदेशों में अमेरिका कनाडा और इंग्लैंड तथा नेपाल है।

साधना सेवा का संगम

अध्यात्म साधना के साथ मानव सेवा भी जुड़े, इस विचार पर आपने सदैव बल दिया है। यही कारण है कि भारत की राजधानी दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, आदि प्रांतों में आप द्वारा संचालित मानव मंदिर केन्द्रों में प्रवचन,सत्संग,ध्यान,योगासन, के साथ साथमानव सेवा के प्रकल्प भी चल रहे हैं। दिल्ली केंद्र में अनाथ बेसहारा बच्चों का गुरूकुल है जिसमें असहाय बालकों के आवास, भोजन, शिक्षा, वस्त्र तथा चिकित्सा आदि की उत्तमव्यवस्था है। इन बच्चों को स्कूली शिक्षा के अलावा योगासन ध्यान तथा ऊंचे संस्कारों की शिक्षा भी दी जाती है। इसी तरह दिल्ली में सेवा-धाम प्राकृतिक चिकित्सा योग तथा आयुर्वेदिक सेंटर भी सेवारत है। हिसार केंद्र में गरीब-स्त्रियों के लिए सिलाई सेंटर तथा निःशुल्क होम्योपैथिक औषधालय चल रहा है। आपके व्यापक विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाली मासिक पत्रिका रूपरेखा का भी नियमित प्रकाशन होता है।

आपके मिशन को सफल बनाने में महान विदूषी पूज्या साध्वी श्री मंजुला श्री जी महाराज का मणि कंचन संयोग है। इसके साथ साथ सरलमना साध्वी श्री मंजुश्री आदि धर्म संघ के सदस्य अध्यात्म चेतना तथा जन जागरण के कार्य को पूरी निष्ठा से आगे बढ़ा रहे हैं। देश विदेश के मानव समाज को आपके इस मिशन से बहुत आशाएं है।

कविता

परमपूज्य गुरुदेवश्री के 75वें वर्ष की सम्पन्नता पर पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री द्वारा रचित गीतिका

यहां-वहां जहां-तहां मत पूछो कहां-कहां गूंजे रूपचन्द्र का नाम
तुमको लाखों सलाम।
घर-घर गली-गली खिल रही कलि कलि पावन है यह धाम।

1. दशों दिशा में फैल रही है देखो नव लाली
धरती के कण-कण में कैसी छाई खुशहाली
मन भाया यह मौसम आया मिली सुधा प्याली
मानव मंदिर धारा गुरूवर ने संभाली
पल में बहार लाए दिल में दुलार लाए
बन अवतार आए स्वाम।

2. सरस्वती ने विद्या की वरमाला पहनाई
सतत सफलता चरण चूमने चरणों में आई
सिद्धि ऋद्धि समृद्धि अलौकिक कमी न रह पाई
तीन लोक का वैभव लुटता है हद पुण्यायी
तम में उजास किया विद्या का विकास किया
पंखों को आकाश दिया स्वाम।

3. आए हो तुम महावीर ईशू का रूप लिए
शुद्ध बुद्ध सी करुणा ने कितने दुख दूर किए
मानवता की पीड़ा हरने विष के घूंट पिए
धर्मचक्री तेरे शासन में सुख से सभी जिए
सबकी संभाल करो जगको निहाल करो
दुख का निकाल करो स्वाम।

4. नव निधियां आमोद मनाती प्रभु सेवा पाकर
कामकुंभ और कल्पवृक्ष कृतकृत्य आपकी सेवा में आकर
सुरनायक नर-नेता सारे चरणों के चाकर
रात दिवस यहां अमन चैन का लहराता सागर
हम अभिमान करें जग गुणगान करे
सब समाधान वरे स्वाम।

5. झूम रही है डाली डाली प्रभु से पा सिंचन
रंग-विरंगे फूलों से नित महक रहा उपवन
युग-युग पावन तेरा शासन पाएं हम भगवन्
कैसा रंग खिला है मानव मंदिर के प्रांगण
सब का उद्धार करो, शक्ति का संचार करो
गण विस्तार करो स्वाम।

कहानी

बेताल पच्चीसी-2

हिन्दी कथा-साहित्य में बेताल पच्चीसी की अपनी अलग पहचान है। इन कथाओं में नीति, संस्कृति और जीवनोपयोगी शिक्षाएं हैं। उसी की एक-एक कथा पढिये हर अंक में। *-गतांक से आगे*

वह दिन आने पर राजा अकेला वहां पहुंचा। योगी ने उसे अपने पास बिठा लिया। थोड़ी देर बैठकर राजा ने पूछा- 'महाराज, मेरे लिए क्या आज्ञा है?'

योगी ने कहा- 'राजन्, यहां से दक्षिण दिशा में दो कोस की दूरी पर मसान में एक सिरस के पेड़ पर एक मुर्दा लटका है। उसे मेरे पास ले आओ, तब तक में यहां पूजा करता हूं।'

यह सुनकर राजा वहां से चल दिया। बड़ी भयंकर रात थी। चारों ओर अंधेरा फैला था। पानी बरस रहा था। भूत-प्रेत शोर मचा रहे थे। सांप आ-आकर पैरों में लिपटते थे। लेकिन राजा हिम्मत से आगे बढ़ता गया। जब वह मसान में पहुंचा तो देखता क्या है कि शेर दहाड़ रहे हैं, हाथी चिंघाड रहे हैं, भूत-प्रेत आदमियों को मार रहे हैं। राजा बेधडक चलता गया और सिरस के पेड़ के पास पहुंच गया। पेड़ जड़ से फुनगी तक आग से दहक रहा था। राजा ने सोचा, हो-न-हो, यह वही योगी है, जिसकी बात देव ने बतायी थी। पेड़ पर रस्सी से बंधा मुर्दा लटक रहा था। राजा पेड़ पर चढ़ गया और तलवार से रस्सी काट दी। मुर्दा नीचे गिर पड़ा और दहाड़ मार-मार कर रोने लगा।

राजा ने नीचे आकर पूछा, 'तू कौन है?'

राजा का इतना कहना था कि वह मुर्दा खिलखिलाकर हंस पड़ा। राजा को बड़ा अचरज हुआ। तभी वह मुर्दा फिर पेड़ पर जा लटका। राजा फिर चढ़कर ऊपर गया और रस्सी काट, मुर्दे को बगल में दबा, नीचे आया। बोला- 'बता, तू कौन है?'

मुर्दा चुप रहा।

तब राजा ने उसे एक चादर में बांधा और योगी के पास ले चला। रास्ते में वह मुर्दा बोला- 'मैं बेताल हूं। तू कौन है और मुझे कहां ले जा रहा है?'

राजा ने कहा- 'मेरा नाम विक्रम है। मैं धारा नगरी का राजा हूं। मैं तुझे योगी के पास ले जा रहा हूं।'

बेताल बोला- 'मैं एक शर्त पर चलूंगा। अगर तू रास्ते में बोलेगा तो मैं लौटकर पेड़ पर जा लटकूंगा।'

राजा ने उसकी बात मान ली। फिर बेताल बोला- 'पण्डित, चतुर और ज्ञानी, इनके दिन अच्छी-अच्छी बातों में बीतते हैं, जबकि मूर्खों के दिन कलह और नींद में। अच्छा होगा कि हमारी राह भली बातों की चर्चा में बीत जाये। मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूं। ले, सुन।'

काशी में प्रतापमुकुट नाम का राजा राज्य करता था। उसके वज्रमुकुट नाम का एक बेटा था। एक दिन राजकुमार दीवान के लड़के को साथ लेकर शिकार खेलने जंगल गया। घूमते-घूमते उन्हें तालाब मिला। उसके पानी में कमल खिले थे और हंस किलोल कर रहे थे। किनारों पर घने पेड़ थे, जिन पर पक्षी चहचहा रहे थे। दोनों मित्र वहां रूक गये ओर तालाब के पानी में हाथ-मुंह धोकर ऊपर महादेव के मन्दिर पर गये। घोड़ों को उन्होंने मन्दिर के बाहर बांध दिया। वो मन्दिर में दर्शन करके बाहर आये तो देखते क्या हैं कि तालाब के किनारे राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ स्नान करने आई है। दीवान का लड़का तो वहीं एक पेड़ के नीचे बैठा रहा, पर राजकुमार से न रहा गया। वह आगे बढ़ गया। राजकुमारी ने उसकी ओर देखा तो वह उस पर मोहित हो गया। राजकुमारी भी उसकी तरफ देखती रही। फिर उसने किया क्या कि जूड़े में से कमल का फूल निकाला, कान से लगाया, दांत से कुतरा, पैर के नीचे दबाया और फिर छाती से लगा, अपनी सखियों के साथ चली गयी।

उसके जाने पर राजकुमार निराश हो अपने मित्र के पास आया और सब हाल सुनाकर बोला- 'मैं इस राजकुमारी के बिना नहीं रह सकता। पर मुझे न तो उसका नाम मालूम है, न ठिकाना। वह कैसे मिलेगी?'

दीवान के लड़के ने कहा- 'राजकुमार, आप इतना घबरायें नहीं। वह सब कुछ बता गयी है।'

राजकुमार ने पूछा- 'कैसे?'

वह बोला- 'उसने कमल का फूल सिर से उतार कर कानों से लगाया तो उसने बताया कि मैं कर्नाटक की रहने वाली हूं। दांत से कतरा तो उसका मतलब था कि मैं दंतबाट राजा की बेटी हूं। पांव से दबाने का अर्थ था कि मेरा नाम पद्मावती है और छाती से लगाकर उसने बताया कि तुम मेरे दिल में बस गये हो।'

इतना सुनना था कि राजकुमार खुशी से फूल उठा। बोला- 'अब मुझे कर्नाटक देश में ले चलो।'

दोनों मित्र वहां से चल दिये। घूमते-फिरते, सैर करते, दोनों कई दिन बाद वहां पहुंचे। राजा के महल के पास गये तो एक बुढ़िया अपने द्वार पर बैठी चरखा कातती मिली।

उसके पास जाकर दोनों घोड़ों से उतर पड़े और बोले- 'माई हम सौदागर हैं। हमारा सामान पीछे आ रहा है। हमें रहने को थोड़ी जगह दे दो।'

उनकी शक्ल-सूरत देखकर और बात सुनकर बुढ़िया के मन में ममता उमड़ आयी। बोली- बेटा, तुम्हारा घर है। जब तक जी में आए रहो।'

दोनों वहीं ठहर गये। दीवान के बेटे ने उससे पूछा- 'माई तुम क्या करती हो? तुम्हारे घर में कौन-कौन है? तुम्हारा गुजारा कैसे होता है?'

बुढ़िया ने जवाब दिया, बेटा, मेरा एक बेटा है जो राजा की चाकरी में है। मैं राजा की बेटी पद्मावती की धाय थी। बूढ़ी हो जाने से अब घर में रहती हूं। राजा खाने-पीने को दे देता है। दिन में एक बार राजकुमारी को देखने महल में जाती हूं।'

राजकुमार ने बुढ़िया को कुछ धन दिया और कहा- 'माई, कल तुम वहां जाओ तो राजकुमारी से कह देना कि जेठ सुदी पंचमी को तुम्हें तालाब पर जो राजकुमार मिला था, वह आ गया है।'

अगले दिन जब बुढ़िया राजमहल गयी तो उसने राजकुमार का सन्देशा उसे दे दिया। सुनते ही राजकुमारी ने गुस्सा होकर हाथों में चन्दन लगाकर उसके गाल पर तमाचा मारा और कहा- 'मेरे घर से निकल जा।'

बुढ़िया ने घर आकर सब हाल राजकुमार को कह सुनाया। राजकुमार हक्का-बक्का रह गया। तब उसके मित्र ने कहा- 'राजकुमार, आप घबरायें नहीं उसकी बातों को समझें। उसने दसों अंगुलियां सफेद चन्दन में मारीं, इससे उसका मतलब यह है कि अभी दस रोज चांदनी के हैं उनके बीतने पर मैं अंधेरी रात में मिलूंगी।'

दस दिन के बाद बुढ़िया ने फिर राजकुमारी को खबर दी तो इस बार उसने केसर के रंग में तीन अंगुलियां डुबोकर उसके मुंह पर मारी और कहा- 'भाग यहां से।'

बुढ़िया ने आकर सारी बात सुना दी। राजकुमार शोक से व्याकुल हो गया। दीवान के लड़के ने समझाया, इसमें हैरान होने की क्या बात है? उसने कहा है कि मुझे मासिक धर्म हो रहा है। तीन दिन और ठहरो।'

तीन दिन बीतने पर बुढ़िया फिर वहां पहुंची। इस बार राजकुमारी ने उसे फटकार कर पश्चिम की खिड़की से बाहर निकाल दिया। उसने आकर राजकुमार को बता दिया। सुनकर दीवान का लड़का बोला- 'मित्र उसने आज रात को तुम्हें उस खिड़की की राह बुलाया है।' **(क्रमशः)**

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

दुष्कर्म कभी पीछा नहीं छोड़ते

○ साध्वीश्री मंजूश्री

साधनारत एक सन्यासी अपनी कुटिया में उदास बैठा था। सन्यासी को चिन्तित देखकर उसका एक भक्त बोला- महाराज आप चिन्ताग्रस्त दिखाई देते हैं क्या कारण है? चिंता तो गृहस्थी को ही होती है, साधु-सन्यासी को क्या चिंता?

साधु गम्भीर होकर अपनी व्यथा सुनाने लगा- सुन शिष्य, सुनना चाहता है तो सुन- 'मैं एक निर्धन महाजन था। मैं अपनी छोटी बहन के साथ कुटिया में रहने लगा। बहन विवाह योग्य थी परन्तु धनाभाव के कारण मैं उस की शादी न कर सका। इस प्रकार समय गुजरता जा रहा था कि एक दिन एक अजनबी रात्री के समय विश्राम करने के लिए हमारी कुटिया में आया। हमने उसे शरण दे दी। उसके पास काफी धन था। रात्री को वह निश्चिंत होकर सो गया। मेरी बहन ने उसकी गला घोंट कर हत्या कर दी और उसका सारा धन लेकर मेरे पास आ गई। मैंने लालचवश वह सारा धन अपने पास रख लिया और उस यात्री का शव पास ही जंगल में दबा दिया।

उस धन से मैंने व्यापार शुरु कर दिया। व्यापार में काफी धन कमा लिया और अपनी बहन का विवाह भी एक धनाढ्य युवक के साथ कर दिया। जीवन सुख से व्यतीत होने लगा। मैंने भी अपनी शादी रचा ली और दो वर्ष के पश्चात एक पुत्र का भी जन्म हो गया। पुत्र भी बड़ा हो गया और उसकी शादी भी एक धन-सम्पन्न परिवार में कर दी परन्तु काल-चक्र में मेरी बहन का स्वर्गवास हो गया। एक बार मेरा पुत्र भी रोगग्रस्त हो गया। रोग असाध्य था, सारा धन खर्च कर देने पर भी वह ठीक न हो सका। एक दिन मैंने अपने रोग-ग्रस्त पुत्र से कहा- बेटा सारा धन तो तुम्हारी बीमारी में चला गया अब मेरे पास कुछ भी नहीं रहा- तुम्हारा इलाज कैसे कर पाऊंगा?'

पुत्र ने उत्तर दिया- 'पिताजी अब इलाज करवाने की आवश्यकता नहीं, मैं कल ही संसार से विदा हो जाऊंगा। मैं वही यात्री हूं जिसका सारा धन आपकी बहन ने और आपने मेरी हत्या कर लूट लिया था। मैंने पूर्व जन्म का बदला लेने के लिए ही आपके घर में जन्म लिया था। वह तुम्हारी बेटी जो पूर्व जन्म में तुम्हारी बहन थी विधवा होकर दुःख भोगेगी और तुम धन विहीन होकर दरिद्रता को प्राप्त होकर कष्ट भोगोगे यह कहकर वह चल बसा। इस घटना के पश्चात मुझे जीवन से वैराग्य हो गया। जब कभी भी बीते समय की याद आती है- मन उदास हो जाता है।

आसक्ति संसार में और भक्ति भगवान की

लोग प्रश्न कहते हैं कि हमारे भारत में भगवान की भक्ति तो बहुत दिखाई पड़ती है, घर-घर में मंदिर हैं। और यहां तो मरने के बाद भी 'राम नाम सत्य है' बोला जाता है। फिर यहां इतना पाप और भ्रष्टाचार क्यों है?

हमारे गुरु लोग जो पूरे देश में मंडरा रहे हैं, आज बाबा जी बन-बन कर लोगों के कान फूंकते जा रहे हैं। चेले बनाते जा रहे हैं लोगों को। असल में उन्होंने ही बिगाडा है भक्ति का माहौल। उनको पता ही नहीं कि भक्ति करनी किसको है। सब इन्द्रियों से भक्ति करते हैं आंख से, कान से, रसना से, पैर से, हाथ से। निन्यानवे प्रतिशत लोग इन्द्रियों से भक्ति करते हैं। पूजा हाथ से, दर्शन मंदिर में जाकर। कान से भागवत सुन रहे हैं, मुख से नाम कीर्तन जप रहे हैं। पुस्तकें पढ़ते हैं- गीता या गुरु ग्रंथ साहब-पाठ करते हैं रसना से। पैरों से चारों धाम की मार्चिंग करते हैं। वैष्णों देवी जा रहे हैं, कहीं बद्रीनारायण जा रहे हैं ये सब नाटक करते हैं हम लोग। ये सब साधना नहीं है। इन्द्रियों द्वारा जो भक्ति की जाती है, भगवान उसको लिखते ही नहीं, नोट नहीं करते, वो तो व्यर्थ की बकवास है, अनावश्यक शारीरिक श्रम है। उपासना या भक्ति या साधना मन को करनी है।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः। बन्धन और मोक्ष का कारण मन ही है, हम मन को तो संसार में लगाये हुये हैं। मां, बाप, बेटा, स्त्री, पति, धन, प्रतिष्ठा इन सब चीजों में मन को लगाएं हैं। और मुख से बोलते हैं 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'। हे भगवान, तुम्ही हमारी मां हो, पिता हो, धन-संपत्ति हो- ये तो हम और झूठ बोल रहे हैं भगवान से। हृदय पर हाथ रख कर के आप लोग सोचिए कि ये जो जीवन भर साधना करते रहे, पूजा-पाठ-जप किए हमने असल में भगवान के दर्शन के लिए कितने आंसू बहाए?

संसार को पाने के लिए संसार के वियोग में तो बड़े आंसू निकले। लड़की की शादी है। हां, दस लाख, बीस लाख, पचास लाख भी फूंक दिया उसके पीछे। अच्छा लड़का भी देखा और लड़की को ब्याह दिया। जब जाने लगी तो मां रोने लगी, बाप रोने लगा। क्यों? अरे तुम तो रुपया दे के उसको निकाल रहे हो घर से, तो फिर बात क्या है? रोते क्यों हो? आसक्ति है मन की, अरे वो तो जा रही है ससुराल में, तुम उसको भेज रहो हो पैसा देकर के। तुम्हें तो खुश होना चाहिए। लेकिन मन का अटैचमेन्ट है।

लेकिन भगवान के लिए तो कभी ऐसा नहीं हुआ, ऐसी रुलाई नहीं फूटी। तो भगवान की उपासना जो हो रही है, वह असल में धोखा है। ये नाम कीर्तन, गुण कीर्तन, लीला कीर्तन तो बच्चों की बातें हैं- जैसे कोई छोटे से बच्चे को काई पाठ रटावे जबानी। लेकिन तत्वज्ञान

जिसको हो, थ्योरी की नॉलिज हो तो उसको पहला सबक ये याद करना है कि मन से भक्ति करनी है। मन से प्यार करो तो उसे सब समझते हैं, पशु-पक्षी भी जानते हैं, मनुष्य की कौन कहे। जैसे मां से, बाप से, बीबी से, पति से, धन से अपने शरीर तक से आप लोग प्यार करते हैं- ऐसे ही तो करना है भगवान से। कोई नया मन नहीं लाना है, कोई नया तरीका नहीं लिखा है शास्त्र- वेद में। सब वेद शास्त्र मैं जानता हूं। कोई नई बात नहीं लिखी कहीं।

जैसे प्यार संसार से करते हैं, ऐसे ही भगवान से करना है। तुम संसार को अपना मानते हो, बस यही गलती हैं। क्यों अपना मानते हो? अपने को शरीर मान लिया। मैं पुरुष हूं, मैं स्त्री हूं, मैं ब्राह्मण हूं, मैं क्षत्रिय हूं, मैं पंजाबी हूं, मैं बंगाली हूं- पहले ये सब बीमारियां पाल लीं। फिर कहते हो कि भगवान का भक्त हूं, दास हूं। असल में तो भूल गये हैं आप उसको।

-प्रस्तुति : अरविन्द कुमार मिश्रा

चुटकुले

1. एक राजा अपने नौकरों से कहते हैं कि तुम ऐलान करवा दो कि- 'मेरे पास इतनी बड़ी तलवार है कि तुम सब के छक्के छुड़ा देगी।' नौकर तुतला बोलता था वह गया और बोला- 'तुनो-तुनो हमारे राजाजी के पास इतनी बड़ी सलवार है कि सबके कच्छे सिलवा देगी।

2. बच्चों सिनेमा देखना बहुत बुरी बात है अध्यापिका ने कहा। हां अध्यापिका जी! क्लास में से चन्दा उठकर बोली- मैंने सिनेमा देखना एक दम बन्द कर दिया है। शाबाश! तुम अच्छी लड़की हो। तभी दूसरी लड़की बोल उठी मैडम इसके घर टेलीवीजन आ गया है।

3. बरसात हो रही थी दो बच्चे गप्प हांक रहे थे। यार कल एक चींटी हाथी पर क्या बैठ गई बेचारा हाथी मर गया। यार तुम हाथी की बात करते हो, दूसरा बोला कल सारी रात आसमान मेरी जेब में था। जब से बाहर निकला है, तब से बरस रहा है।

4. पिता अपने बेटे से- पप्पू कितने कम नंबर मिले हैं तुम्हें इस परीक्षा में? पप्पू यह नया फैशन है पिताजी।
पिताजी- कैसा फैशन? पप्पू-पिताजी ये मिन्नी नंबर है!

5. औरंगजेब - हम क्यों नहीं ढूंढ पा रहे हैं शिवाजी को।
सेनापति - सरकार, क्योंकि हम मुगल हैं गुगल नहीं।

-प्रस्तुति : जय

मासिक राशि भविष्यफल- सितम्बर 2013

○ डॉ. एन.पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यसाय की दृष्टि से यह माह संघर्ष के चलते आंशिक लाभ देने वाला है। क्रोध पर काबू रखें। लोग दिलासा देंगे किन्तु समय पर काम नहीं आयेंगें। इसके कारण मानसिक चिंता बनी रहेगी। परिवार के लोगों में भी सामन्जस्य बनाये रखना होगा। छोटी बड़ी यात्रा होगी। इसमें सावधानी अपेक्षित है।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति के लिए रहेगा। अकारण किसी के मामले में अपनी टांग न अड़ाएं। पिकनिक आदि के अवसर आयेगें जिससे मन को कुछ खुशी मिलेंगी साथ ही किसी प्रतियोगिता में हिस्सा ले सकते है। समाज में मान सम्मान बनाये रखने के लिए प्रयास रत रहना होगा। परिवारिक स्थिति सामान्य रहेगी।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिए व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभ की स्थिति लिए हुए है। कुछ जातको को भूमि भवन के क्रय-विक्रय से लाभ होगा। ये जातक अपने बच्चों कि पढ़ाई पर भी ध्यान देंगें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा । परिवारिक स्थिति भी सामान्यतः अच्छी रहेगी। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क- कर्क राशि की जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह संदेहा स्पद व्यक्तियों से बचते हुए व्यापार या व्यवसाय करने का है, वैसे यह माह लाभ दायक रहेगा। साझेदारी के कार्यों में भी लाभदायक स्थिति रहने की आशा की जा सकती है। कार्यो में से अपने सेहत के लिए भी कुछ समय निकाले दवा समय पर लेते रहे। समाज मे मान-सम्मान बना रहेगा।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध में अच्छी लाभ दायक स्थिति लिए हुए है। नई योजनांए भी सिरे चढ़ सकती है। शत्रु सिर उठांएगे, इन अवसरों पर बड़ी समझदारी से अपना काम निकाले। अनावश्यक वार्ता से बचें कुछ जातक धर्म-कर्म का लाभ उठायेगें व कोई धार्मिक अनुष्ठान भी करा सकते है।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर लाभ दायक स्थिति लिए हुए है। कुछ जातकों को भूमि-भवन का लाभ भी होगा। किसी मित्र के मिलने से खुशी भी होगी और फायदा भी होगा। परिवारिक सामन्जस्य बनाये रखना होगा। अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य का खायल रखें। सामाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह प्रगति करने का है। छोटी-बड़ी यात्रा होगी जिससे जन-सम्पर्क बढ़ेगा और उससे इन जातकों को फायदा होगा। ये जातक धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेंगे। समाज में कही विरोध भी होगा किन्तु ये जातक विरोध पर काबू पाने में सक्षम होंगे। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रम साध्य लाभ दिलाने वाला है। आय तथा व्यय का सन्तुलन बनाए रखें। परिवार तथा मित्रों में साख बनी रहेगी। दूरस्थ स्थान से कोई खुशी का समाचार मिल सकता है। परिवारिक सामन्जस्य बना रहेगा। धर्म-कर्म में रूचि बनी रहेगी। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा। अपने स्वास्थ्य को दांव पर लगाकर कोई कार्य न करें।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवासय की दृष्टि से यह माह नई योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए अच्छा है। लाभ मिलेगा। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखें। । मित्रों का सहयोग मिलेगा। कोई खुशी का नवीन समाचार मिलेगा। काम का बोझ इतना भी न बढ़ा ले कि सेहत का भी ख्याल न रहें। सेहत का प्रति सचेत रहें। समाज में मान-सम्मान मिलेगा।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते अच्छा लाभ देने वाला है। इन जातकों को भाग्य साथ देगा। अधिक रात्रि तक चलने वाली पार्टी आदि में न जायें। कोई धोखा हो सकता है। अपने व्यय पर भी अंकुश रखें। अन्यया ये ही मानसिक परेशानी का कारण हो सकता है। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखना होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कुम्भ- कुम्भ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आंशिक लाभ देने वाला है। अपने अधीनस्थों की ओर ध्यान दे। कार्य पर नज़र रखें बड़ों-बुजुर्गों से राय लें और उनकी राय का आदर करें। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान-सम्मान मिलेगा। सेहत सामान्य रहेगी

मीन- मीन राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से शुभ फल दायक है। खर्चा सीमित रहेगा। अपने आपको आवश्यकता से अधिक कार्यों मे न उलझाएं रखें। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखने में कामयाब होंगे। साझेदारी के कार्मों मे सचेत रहना होगा। किसी के कार्य में अनावश्यक रूप से न उलझें। अपनी तथा अपने जीवन साथी की सेहत का ख्याल रखें।

-इति शुभम्

धर्म के आसान मार्ग को कठिन तथा जटिल बनाया है संतों और पंथों ने

○ *आचार्यश्री रूपचन्द्र*

अपनी विदेश-यात्रा के अन्तर्गत पूज्य गुरूदेव का पन्द्रह दिवसीय प्रवास कनाडा के विभिन्न क्षेत्रों में रहा। विंडसर, लन्दन-आंटेरियो, नियाग्रा फाल्स, ब्रेम्पटन, टोरंटो, मिसिसागा, बर्लिंगटन, इटोबिकोक आदि अनेक शहरों में पूज्यवर के प्रवचनों की धूम रही। करीब दस वर्षों के पश्चात् पूज्य गुरूदेव के कनाडा-पदार्पण से जन-समुदाय में एक अलग ही हर्ष और उल्लास देखने को मिल रहा था। लन्दन-प्रवास में सीनियर-सिटीजनों के बीच अपने प्रवचन में पूज्य आचार्यवर ने कहा- धर्म के रास्ते को समझना अत्यंत आसान है। चाहे अमीर हो या गरीब, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ, स्त्री हो या पुरूष धर्म-मार्ग को समझना सभी के लिए अत्यंत सरल और आसान है। हमारा मन जो संसार में लगा है, इन्द्रिय सुखों में लगा है, उसे वहां से हटाकर आत्म-अनुभव और परमात्मा के चरणों में लगा दिया जाए। यही है समस्त धर्म-दर्शनों और साधना-विधियों का सार। इसे समझना भला क्या कठिन है? किंतु विडम्बना यह है संतों-महंतों, आचार्यों तथा धर्म के ठेकेदारों ने इस आसान मार्ग को नानाविध मान्यताओं, अजीबों-गरीब वेश-भूषाओं तथा कर्म-कांड प्रधान क्रियाओं में उलझा कर रख दिया है। हम इन सबसे ऊपर उठें। ॐ जैसे मंत्र-नाद के अभ्यास से भीतर गहरे उतरें। प्रभु का आशीर्वाद उन क्षणों में आप तक स्वयं आएगा।

लंदन-प्रवास में एक विशेष प्रवचन श्री अमृत-किरण नाहटा के आवास पर तथा एक विशेष प्रवचन श्रीमती राज जैन के आवास पर भी रहा। सभी जगहों पर आशातीत उपस्थिति थी। लंदन-प्रवास को सफल बनाने में श्री अमृत-किरण जी नाहटा की प्रशंसनीय सेवायें रहीं। इनके आवास पर ऐसा लगता था जैसे दिल्ली आश्रम में रह रहे हैं। वैसे लंदन-समाज पूज्य गुरूदेव के साथ हिसार-सुनाम शहरों की तरह पूरे श्रद्धा-भाव से जुड़ा है। इसी यात्रा में एक दिन का प्रवास विश्व-प्रसिद्ध विशाल जल-प्रपात नियाग्रा फाल्स पर रहा। मध्यान्ह में आकाश में इन्द्र-धनुषी रंगों में उछलते-नाचते जल-फुहारों तथा धरती पर अर्ध-चन्द्राकार में पूरे वेग से इठलाती-दौडती जल-धाराओं का आनंद लिया। उल्लेखनीय है इसी जल-प्रपात पर आचार्य सुशील मुनिजी के साथ पूज्य गुरूदेव के कई साप्ताहिक फेमिली-केम्प वर्षों पूर्व आयोजित हुए थे। रात्रि में योगी शांति पारख के आवास पर ध्यान-योग पर चर्चा हुई।

टोरंटो साप्ताहिक प्रवास में पूज्यवर का एक विशेष प्रवचन जैन सेंटर तथा एक विशेष

प्रवचन सीनियर सिटीजनों के बीच हुआ। कुछ सीनियर सिटीजन तो नब्बे वर्षों की उम्र में भी स्वस्थ/प्रसन्न नजर आ रहे थे। अपने प्रवचन में पूज्य आचार्यवर ने कहा- आप लोगों ने अपनी उम्र का लम्बा सफर तय किया है। अब आत्मालोचन करना है आप कहां तक पहुंचे हैं। जीवन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए पूज्यवर ने कहा- हमें शरीर तो मनुष्य का मिला है। किंतु हमारे भीतर कई तरह के पशु भी हैं। उन पशुओं पर विजय पाना तथा भीतर के देवत्व का जागरण- यही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। जो ऐसा करता है वही सार्थक जीवन जीता है। सीनियर सिटीजनों के बीच प्रवचन में समाज सेवी श्री ललित पांसर की विशेष सेवाएं रहीं। श्रीमती प्रफुल्ला बेन तथा श्रीमती भारती कारिया का भी पूरा सहयोग रहा। जैन सेंटर में प्रवचन की आयोजना में श्रीमती विशाखा वारिया का विशेष योग-दान रहा। लोगों की उत्कट भावना को ध्यान में रखते हुए पूज्यवर का श्री प्रभुलाल भानुबेन मेहता, श्री कनक मधु चोपड़ा, श्री हरीश विशाख वारिया, श्री कीर्ति क्षेमलता खंडोर, श्री बाबुभाई खंडोर, श्रीमती मणिबेन राजेश कल्पना सेठ, श्री खुशाल इला साल्बिया, श्री वृजमोहन शशि जैन, श्रीमती उषा जैन, श्री किरीट मीना मेहता, श्री ललित पांसर, श्री अनूप स्वाति वागरेचा आदि परिवारों में पदार्पण हुआ। स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने पर भी श्रद्धा-भक्ति भरे हृदयों को ठुकराना भी संभव नहीं था। टोरंटो-प्रवास में रात्रि विश्राम सदा सेवाभावी श्री हिम्मत भाई दुलारी बेन के आवास पर ही रखा। इनकी सेवा-तत्परता दिल्ली आश्रम की तरह सुखदायी रहती है। कनाडा-प्रवास में विडंसर-निवासी श्री चन्दूभाई रंजना बेन की उत्कृष्ट सेवा-भावना इसलिए विशेष उल्लेखनीय है कि दस दिनों तक यह परिवार निरंतर पूज्य गुरूदेव के सान्निध्य में रहा। अपने कार-रथ में सारथि बनकर तथा आवश्यक सभी वस्तुओं के विवेक के साथ निस्पृह भाव से इस परिवार ने अपनी सेवाएं दीं।

पूरे कनाडा-प्रवास में श्री अरूण योगी का हर शहर में अपने योग-प्रशिक्षण का विशेष प्रभाव रहा। पूरे समर्पण भाव से अरूण योगी ने पूज्यवर की सेवा-सुविधा का खयाल रखते ही हैं, अपने मधुर विनम्र स्वभाव से हर किसी को अपना बना लेते हैं। हर जगह लोगों को लगता है इनका Yoga with difference और with Research है। इस प्रकार पन्द्रह दिवसीय सफल कनाडा-यात्रा संपन्न करके पूज्य आचार्यवर व अरूण योगी 23 जुलाई को न्यूयार्क पधार गए।

दिनांक 28 जुलाई रविवार, लोग आइलेंड, न्यूयार्क में एक विशेष प्रवचन समाजसेवी श्री कृष्णकांत मेहता के आवास रहा। श्री मेहता के विशाल परिवार में सत्रह डॉक्टर हैं जो पूरे अमेरिका में इस दृष्टि से पहला परिवार माना जाता है। यह परिवार पूज्यवर के प्रति

बड़े श्रद्धा भाव से जुड़ा है। पूज्यवर की हर अमेरिका-यात्रा में एक विशेष प्रवचन का आयोजन रहता ही है, जिसमें समाज के प्रमुख परिवारों की उपस्थिति होती है। श्री मेहताजी की 94 वर्षीय माता जी की अनन्य श्रद्धा का आलम यह है शरीर की अशक्तता और सुस्ती के बावजूद पूज्य गुरूदेव के नाम सुनते ही उनमें चुस्ती और ताकत आ जाती है। पूज्यवर ने अपने प्रवचन में कहा- इसमें कोई संदेह नहीं है जिसका मन धर्म-रत होता है, स्वयं देव-गण उसे नमन करते हैं, उसके सेवा-सहयोग में तत्पर रहते हैं। शेष विदेश-यात्रा का वर्णन अगले अंक में पढिये।

जैन आश्रम, नई दिल्ली में पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्रीजी के सान्निध्य में चातुर्मास प्रवास सानंद चल रहा है। पूज्या साध्वीश्री का स्वास्थ्य जरा नरम चल रहा है। पूज्य गुरूदेव की अनुपस्थिति में आपको आश्रम में दर्शनार्थ आने वाले श्रावकों को समय देना ही पड़ता है। यह सब मनो-बल से संभव हो पाता है। आश्रम की अन्य सारी प्रवृत्तियां प्रगति पर है। सुनाम पंजाब में मातृ-स्वरूपा साध्वीश्री चांदकुमारी जी के चातुर्मास से न केवल सुनाम बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी अच्छी धर्म-जागरणा चल रही है। अब पूज्या साध्वीश्री की अस्वस्थता को देखते हुए आप दिल्ली पधार गई हैं।

पूज्य आचार्यश्री की स्वदेश-वापसी

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्दजी का अपने सहयोगी योगी अरूण तिवारी के साथ 19 सितम्बर 2013 को स्वदेश भारत-आगमन हो रहा है। *अपनी तीन माह और एक सप्ताह की विदेश-यात्रा में पूज्य गुरूदेव का अमेरिका-कनाडा के अनेक शहरों में पदार्पण हुआ। हर क्षेत्र में योग-ध्यान तथा प्रवचनों की धूम रही। एक प्रभावशाली तथा प्रभावनापूर्ण धर्म-यात्रा का वर्णन अपने रूपरेखा के अंकों में पढ़ा ही होगा। पिछले कुछ वर्षों की अपेक्षा यह विदेश-यात्रा कुछ अधिक लम्बी रही। इन्तजार की घड़ी अब खत्म हो रही है और पूज्यवर हमारे बीच शीघ्र ही पधार रहे हैं। हार्दिक अभिनन्दन।*

रूपरेखा-पत्रिका-परिवार।

-श्री धनराज चेतना मेहता आवास पर पूज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते (बायें से) योगी अरूण, श्री चिराग मेहता, श्री धनराज मेहता, श्री जय मेहता एवं डॉ. चेतना मेहता (न्यूयार्क)।

-नियाग्रा फाल्स (कनाडा) में पूज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए (बायें पीछे से) श्री दिनेश पारख, योगी अरूण, श्री शांति पारख आदि।

-पूज्य गुरूदेव के साथ (बायें से) योगी अरूण, श्रीमती किरण नहाटा, श्री अमृत नहाटा, श्री चंदुभाई मोरविया, श्रीमती रंजना बेन, श्रीमती चंद्रप्रभा मेहता एवं श्री अमृत नहाटा आवास (लंदन, ओंटोरियो)।

-पूज्य गुरूदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भक्त वत्सल श्री हिम्मत भाई खंडोर व श्रीमती दूलारी बहन खंडोर टोरंटो (कनाडा)।

-जैन सेंटर, टोरंटो (कनाडा) में पूज्य गुरूदेव मंत्र नाद का अभ्यास कराते हुए।

-जैन सेंटर टोरंटो (कनाडा) में योगी अरूण से योग प्रशिक्षण लेते हुए लोग।

1. नियाग्रा फाल्स में पूज्य गुरूदेव के साथ (बायें से) श्री चंदुभाई, श्रीमती रंजना बेन और कनेडियन हैट, फ्लैग और ड्रेस के रंग में रंगे शैलानियों के मध्य हैं योगी अरूण।
2. लंदन, ओंटारियो में सिनियर ग्रुप को प्रणायाम का अभ्यास करवाते हुए योगी अरूण।

-Headquaters-United Nation Organization सयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय न्यूयार्क में योगी अरूण का परिचय करवाते हुए श्री आशीष मेहता। योगी अरूण के मार्ग दर्शन में प्राणायाम का अभ्यास करते हुए यूनिसेफ व संयुक्त राष्ट्र संघ के स्टाफगण।

-लंदन, ओंटारियो के सिनियर ग्रुप के सदस्यों के बीच अपना ओजस्वी प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचंन्द्र जी महाराज।

-मिसिसागा (कनाडा) में पूज्य गुरूदेव के प्रवचनों को बड़ी तन्मयता से सुनते हुए सिनियर ग्रुप के सदस्य पहली पंक्ति में बायें से दूसरे नं. पर भारती कारिया एवं तीसरे नं. पर श्रीमती प्रफुल्ला बेन। इस आयोजन में प्रमुख भूमिका रही ललित जी पांसर की।